श्री दुर्गा स्तुति

तीसरा अध्याय

दोहा:

चक्षुर ने निज सैना जभी संहार।
क्रोधित होकर लड़ने को आप हुआ तैयार।
ऋषि मेधा ने राजा से फिर कहा ।
सुनों तृतीय अध्याय की अब कथा ।

महा योद्धा चक्षुर था अभिमान ।
गर्जता हुआ आया मैदान में ।
वह सैनापति असुरों का वीर था ।
चलाता महा शक्ति पर तीर था ।
मगर दुर्गा ने तीर काटे सभी ।
कई तीर देवी चलाए तभी ।
जभी तीर तीरो से टकराते थें
तो दिल शूरवीरों के घबराते थे।
तभी शक्ति ने अपनी शक्ति चला ।
वह रथ असुर का टुकड़े-टुकड़े किया ।
असुर देख बल मां का घबरा गया ।
खड़ग हाथ ले लड़ने को आ गया ।
किया वार गर्दन पे तब शेर की ।
बड़े वेग से खड़ग मारी तभी ।
भुजा शक्ति पर मारा तलवार कों ।
वह तलवार टुकड़े गई लाख हों
असुर ने चलाई जो त्रिशूल भी ।
लाई माता के तन को वह फूल सी ।
लगा कांपने देख देवी का बल ।

मगर क्रोध से चैन पाया न पल ।
असुर हाथी पर माता थी शेर पर ।
लाई मौत थी दैत्य को घेर कर ।
उछल सिंह हाथी पे ही जा चढ़ा ।
वह माता का सिंह दैत्य से जा लड़ा ।
जभी लड़ते लड़ते गिर पर ।
बढ़ी भद्रकाली तभी क्रोध कर ।
असुर दल का सैना पति मार कर ।
चली काली के रूप को धार कर।
गर्जती खड़ग को चलाती हुई ।
वह दुष्टों के दल को मिटाती हुई ।
पवन रूप हलचल मचाती हुई ।
असुर दल जमीं पर सुलाती हुई ।
लहू की वह नदियां बहाती हुई ।
दोहाः- महांकाली ने असुरों की जब सैना दी मार ।
महिषासुर आया तभी रूप भैंसे का धार ।
सवैया: गर्ज उसकी सुनकर लगे भगाने गण ।
कई भागतों को असुर ने संहारा ।
खुरों से दबाकर कई पीस डालें
लपेट अपनी पूंछ में कईयों को मारा ।
जमीं आसमां को सीगों से हिलाया ।
पहाड़ों को सींगों से उसने उखाड़ा ।
श्वांसों से बेहोश लाखों ही कीनें
लगे करने देवी के गण हा हा कार ।
विकल अपनी सैना को दुर्गा ने देखा ।
चढ़ी सिहं पर मार किलकार आई ।
लिए शंख चक्र गदा पदम हाथों ।
वह त्रिशूल परसा ले तलवार आई ।
किया रुप शक्ति ने चण्डी का धारण ।
वह दैत्यों का करने थी सहारं आई ।
लिया बांध भैंसे को निज पाश में झट ।

असुर ने वो भैंसे की देह पलटाई ।
बना शेर सन्मुख लगा गरजने वों
तो चण्डी ने हाथों में परसा उठाया ।
लगी काटने दैत्य कै सिर को दुर्गा ।
तो तज सिंह का रुप नर बन के आया ।
जो नर रुप की मां ने गरदन उड़ाई ।
तो गज रुप धारण किया बिल बिलाया
लगा खैंचने शेर को सूंड से जब ।
तो दुर्गा ने सूंड को काट गिराया ।
कपट माया कर दैत्य ने रुप बदला ।
लगा भैंसा बन के उपद्रव मचानें
तभी क्रोधित होकर जगत मात चण्डी।
लगी नेत्रों से अग्नि बरसानें
धमकते हुए मुख से प्रगटी ज्वाला ।
लगी अब असुर को ठिकाने लगानें
उछल भैंसे की पीठ पर जा चढ़ी वह ।
लगी पांवो से उसकी देह को दबानें
दिया काट सर भैंसे का खड़ग से जब ।
तो आधा ही तन असुर का बाहर आया ।
तो त्रिशूल जगदम्बे ने हाथ लेकर ।
महा दुष्ट का सीस धड़ से उड़ाया ।
चली क्रोध से मंय्या ललकारती तब ।
किया पल में दैत्यों का सारा सफाया ।
'चमन' पुष्प देवों ने मिल कर गिराए ।
अप्सराओं व गन्धर्वो ने राग गाया ।
दोहा:- तृतीय अध्याय में है महिषासुर सहांर ।
'चमन ' पढ़े जो प्रेम से मिटते कष्ट अपार।